आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022



# शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 07 | उदयपुर बुधवार 15 अप्रेल 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

## 20 तक सख्ती, फिर कुछ छूट संभव : प्रधानमंत्री

**नयी दिल्ली (एजेंसी)।** कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिये लागू देशव्यापी लॉकडाउन को 3 मई तक बढ़ाने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 14 अप्रेल को घोषणा की।

राष्ट्र के नाम संबोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि अगले एक सप्ताह में कोरोना के खिलाफ लड़ाई में कठोरता और ज्यादा बढ़ाई जाएगी। 20 अप्रैल तक हर कस्बे, थाने, जिले, राज्य को परखा जाएगा कि वहां लॉकडाउन का कितना पालन हो रहा है। जो क्षेत्र इस अग्नि परीक्षा में सफल होंगे, जिनके हॉटस्पाट में बदलने की आशंका भी कम होगी, वहां पर 20 अप्रैल से कुछ जरूरी गतिविधियों की अनुमति दी जा सकती है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत कई विकसित देशों की तुलना में महामारी के फैलाव को रोकने में सफल रहा है। 'वयं राष्ट्रे जागृयाम' अर्थात हम सभी राष्ट्र

को जीवंत और जागृत बनाए रखेंगे। उन्होंने हाथ जोड़कर सभी से अनुरोध किया कि अब कोरोना को किसी भी कीमत पर नए क्षेत्रों में फैलने नहीं देना है। उन्होंने देश के युवा वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे विश्व व मानव कल्याण के लिए आगे आकर कोरोना की वैक्सीन बनाने का बीड़ा उठाएं।

मोदी ने लोगों से 7 विषयों पर सहयोग भी मांगा जिसमें बुजुर्गों का ध्यान रखने, गरीबों के प्रति संवेदनशील नजरिया अपनाने, लोगों को नौकरी से नहीं निकालने, सामाजिक दूरी बनाने, डॉक्टरों, स्वास्थ्यकर्मियों, सफाईकर्मियों, मीडियाकर्मियों, पुलिसकर्मियों और सुरक्षाकर्मियों जैसे मुद्दे शामिल हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि अगर सिर्फ आर्थिक दृष्टि से देखें तो अभी ये मंहगा जरूर लगता है, लेकिन भारतवासियों की जिंदगी के आगे, इसकी कोई तुलना नहीं हो सकती।

## राष्ट्रनेता की तरह बोले मोदी किसी का नहीं किया विरोध

**– डॉ. वेदप्रताप वैदिक –**

**भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना को लेकर राष्ट्र के नाम जो तीसरा संदेश दिया, उसकी भाषा, शैली और कथ्य- तीनों ही प्रासंगिक और प्रेरक थे। उनके इस दावे पर मतभेद हो सकता है कि कोरोना के खतरे का सामना उनकी सरकार ने ठीक समय पर शुरू कर दिया था, लेकिन इसमें शक नहीं है कि दुनिया के कई शक्तिशाली देशों के मुकाबले कोरोना की महामारी का फैलाव भारत में बहुत कम हुआ है।

कई अत्यंत सुविधा सम्पन्न राष्ट्रों में कोरोना के शिकार लोगों की संख्या जनसंख्या के अनुपात में भारत से सौ गुना ज्यादा है। अच्छा होता कि मोदी अपने संबोधन में एक-दो मिनट इस तथ्य पर भी बोलते कि यह महामारी भारत में उतनी ज्यादा क्यों नहीं फैली? हमारे डाक्टर्स और नर्सों की सेवा और आम जनता की सावधानियां तो उसका कारण हैं ही, लेकिन भारतीय संस्कृति की जीवन पद्धति भी इसका बड़ा कारण है।

करोड़ों भारतीय जब आपस में मिलते हैं तो एक- दूसरे से हाथ मिलाने की बजाय नमस्ते करते हैं, शारीरिक दूरी बनाए रखते हैं, फ्रिज में रखे बासी खाने की बजाय ताजा खाना पसंद करते हैं, मांसाहारी लोग भी शाकाहार ज्यादा करते हैं और अपने रोजमर्रा के खाने में ऐसे मसालों का प्रयोग करते हैं, जो रोगों से लड़ने की क्षमता को बढ़ाते हैं।

इन्हीं मसालों के सतत् प्रयोग के कारण यूरोप और अमेरिका में बसे भारतीय लोग कोरोना के शिकार कम हो रहे हैं। यह अच्छा हुआ कि मोदी ने चलते-चलते आयुष मंत्रालय की आयुर्वेदिक सीख का भी जिक्र कर दिया।

कुछ हिन्दी अखबार और

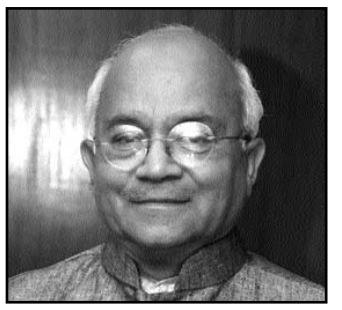

एकाध टीवी चैनल इन घरेलू नुस्खों पर जरूर जोर दे रहे हैं, लेकिन मैं आशा करता हूं कि मीडिया देश के करोड़ों लोगों को इस दिशा में प्रेरित करेगा। प्रधानमंत्री ने जिन सात मुद्दों 'सप्तपदी' का जिक्र किया, वह भी बहुत उत्तम है।

घर के बुजुर्गों का ध्यान, तालाबंदी में शारीरिक दूरी, मुखौटा पहने रखने, काढ़ा आदि पीते रहने, आरोग्य सेतु एप को डाउनलोड करने, डाक्टर्स, नर्सों और पुलिसकर्मियों आदि का सम्मान करने का अनुरोध बहुत ही प्रासंगिक है। किसी राजनेता के मुंह से ऐसी बातें सुनकर दिल को बहुत ठंडक मिलती है। जिन दो अन्य बातों पर मोदी ने जोर दिया है, वे भी मार्मिक हैं।

एक तो देश में कोई भी भूखा न सोए। गरीबों को लोग भोजन पहुंचाएं। दूसरा, व्यवसायी और उद्योगपति अपने किसी कर्मचारी को नौकरी से न निकाले। प्रधानमंत्री का यह मानवीय अनुरोध ऐसा है, जो किसी भी राजनेता को अपने पद से भी ऊंचा उठा देता है। यह गौर करने लायक बात है कि पिछले 20- 25 दिनों में भाजपा सरकार ने इस कोरोना संकट का सांप्रदायीकरण करने की कोई कोशिश नहीं की।

मोदी ने अपने भाषण में ऐसा कोई जिक्र तक नहीं किया। भाजपा अध्यक्ष जगतप्रकाश नड्डा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने निजामुद्दीन के जमाती जमावड़े को सांप्रदायिक रंग देने का स्पष्ट विरोध किया है। यह राजनीतिक परिपक्वता का जीता-जागता प्रमाण है। सरकार, भाजपा और संघ के इस रचनात्मक रवैये को जमाते-तब्लीगी के वे कार्यकर्ता अभी तक समझ नहीं पाए हैं, जो अभी तक कोरोना को बगल में दबाए हुए अपने घरों में छिपे बैठे हैं या उन्हें खोजकर इलाज करने वाले डॉक्टर और नर्सों पर पत्थर और डंडे बरसा रहे हैं। वे नहीं जानते कि उनकी लापरवाही के कारण सबसे ज्यादा नुकसान उन्होंने अपने रिश्तेदारों, मित्रों और करीबियों को ही पहुंचाया है। यदि मोदी इन गलतफहमी के शिकार भारत माता के इन बेटों को भी प्रेमपूर्वक समझाते तो कोरोना को काबू करने में कुछ और मदद मिल जाती। अपने इस तीसरे कोरोना संदेश में मोदी का एक नया रूप भी देखने को मिला। राजनेता का नहीं, राष्ट्रनेता का। विरोधी दल आज भी कई मुद्दों पर सरकार की टांग खींचने से नहीं चूक रहे हैं, लेकिन मोदी ने एक शब्द भी ऐसा नहीं बोला, जो उनके विरुद्ध हो। विरोधियों का काम है, विरोध करना, लेकिन मोदी ने उनका विरोध करने की बजाय उनके सहयोग का आह्वान किया है। संकट की घड़ी में यही करना उचित है। इस संदेश में मोदी चाहते तो देश के लोगों को अपना दिन खुशी-खुशी बिताने का नुस्खा भी बता सकते थे। उनकी बात का गहरा असर जरूर होता। लोगों की उदासीनता दूर होती। वे लोगों को यह बताना क्यों भूल गए कि आज सारी दुनिया कोरोना की दवाई के लिए भारत की तरफ देख रही है। भारत आज विश्व-त्राता के रूप में उभर रहा है। कोरोना के इस दौर में मोदी समेत हमारे सभी नेता और मीडिया भी कोरोना से जुड़े अंग्रेजी शब्दों का ही प्रयोग कर रहे हैं। इन शब्दों को देश के 140 करोड़ लोगों में से कितने लोग समझ सकते हैं? नौकरशाहों की नकल करते रहना जरूरी नहीं है। हम लॉकडाउन को तालाबंदी, वायरस को विषाणु, सोशल डिस्टेंसिंग को सामाजिक दूरी, मास्क को मुखौटा, क्वारेंटाइन को पृथकवास, वेंटिलेटर को सांसयंत्र और सेनिटाइजेशन को शुद्धिकरण कह सकते हैं।

**– दैनिक भास्कर, उदयपुर, 15 अप्रेल 2020 से साभार**

## लॉकडाउन की परेशानियों से कांग्रेस वाकिफ : पायलट

**जयपुर (सुजस)।** कांग्रेस एवं भामाशाहों के सहयोग से लगभग सभी जिलों में जनता रसोई शुरू की गई है जिसके माध्यम से वंचित एवं जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। सरकार की गाइडलाइन तथा सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए शीघ्र मनरेगा के कार्य भी शुरू किए जाएंगे जिससे ग्रामीण श्रमिकों को उनके निकट ही रोजगार उपलब्ध हो सके। यह बात राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष एवं उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट ने कही। पायलट ने प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा कोविड-19 के संबंध में प्रदेश एवं संभाग स्तरीय कन्ट्रोल रूम के प्रतिनिधियों तथा जिलाध्यक्षों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये वार्ता कर जिलों में किए जा रहे राहत कार्यों का फीडबैक लिया।

जिलाध्यक्षों ने अवगत कराया कि प्रदेश के विभिन्न जिलों के कई लोग अभी भी अन्य प्रदेशों की फंसे हुए हैं। उनके लिए भी भोजन, आवास, चिकित्सा एवं पुनः राजस्थान में लाने की व्यवस्था की जाए। पायलट ने बताया कि अन्य राज्यों में फंसे प्रवासी राजस्थानियों की देखभाल के लिए पहले भी वहां की राज्य सरकारों से निवेदन किया गया था तथा अब जो नए मामले संज्ञान में आए हैं उनके बारे में भी समय-समय पर राज्य सरकारों तथा प्रदेश कांग्रेस कमेटियों के सम्पर्क किया जा रहा है तथा किसी भी प्रवासी को उसके वर्तमान प्रवास वाले राज्य में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दिया जाएगा।

स्मृतियों के शिखर (97) : डॉ. महेन्द्र भानावत

# चित्तौड़ के किले पर दिव्यात्माओं का मेला (2)

**यह मेला दिव्यात्माओं का है। जो आत्माएं सद्गति में हैं वे सब इस मेले में सम्मिलित होती हैं। जितने भी अच्छे संत, सतियां, महापुरुष हुए हैं वे सब मेले में आते हैं। महाराणा मोकल के समय से इस मेले का प्रारम्भ हुआ। तबसे अब तक लगता आ रहा है। इस मेले में जगत्जननी जोगमाया सबको काम की जिम्मेदारी सौंपती है और पिछले दिये गये कार्य का लेखा-जोखा करती है। मुख्य दीपावली पर जो भूतों का मेला लगता है उसकी तैयारी तो दो ही दिन में कर ली जाती है पर इस मेले की तैयारी में पूरे नौ दिन लगते हैं। दिव्यात्माओं का यह मेला मुझे भूतों के मेले की तरह कतई डरावना नहीं लगा। चांदनी रात का यह मेला हम लोगों के लिए बड़ा सुखद और शांतिमय रहा। इसके आनंद की अनुभूति का क्या शब्द दूं! शब्दों में बांधने का यह मेला है भी नहीं। जो दिव्य अनुभूति हुई वह इस लोक की अनुभूति तो नहीं ही कही जा सकती।**

इस बार सन् 1984 की बैकुंठ चतुर्दशी को कल्लाजी के दर्शन किये तो उन्होंने हुकम दिया कि आज ही चित्तौड़ चलना है। वहां कल की देव दीवाली को दिव्यात्माओं का लगने वाला मेला दिखायेंगे। लिहाजा हमने उदयपुर से एक टेक्सी ले ली। मैं, डॉ. सुधा गुप्ता और मेरा छोटा बच्चा तुक्तक सरजुदासजी के साथ निकल पड़े। रात को दस बजे हम चित्तौड़ पहुंच गए। वहां बिड़ला धर्मशाला में हमने अपना पड़ाव डाला जहां सभी हमसे परिचित थे।

हमें समझने में तनिक देर नहीं लगी कि कल्लाजी बावजी का पधारना हो गया है जो चुपचाप अपने सैनिकों को यहां की व्यवस्था बाबत आदेश-निर्देश दे रहे हैं। हमें कल्लाजी की बात तो स्पष्ट सुनाई दे रही है पर सैनिकों में से कोई आवाज या कि उनकी भनक तक नहीं सुनाई पड़ रही है। मैं चुपचाप अपनी डायरी में लिखता चलता हूं-

''- छोगमलजी ने के दे के वनै जैन्यांरा मन्दर कनै ऊबा राखे। जो आवे वनै राम कीजो, जवार कीजो।

- परवतसिंहजी कठे? हूरजपोल कुण है? दखण री दिशा में कुण-कुण है? गोरधनसिंहजी और.... और.... हां-हां- कालूसिंहजी कठै? मद में मेल्या कालूसिंहजी ने? हां-हां ठीक है- ठीक है? वांनै कै दीजै कै सब त्यार उभारेबे।

- बागसिंहजी सा. रे वठै कुण है? अमरसिंहजी ओ ठीक है। हड़मतसिंहजी कठै? हड़मतसिंहजी नै म्हारै कनै भेज तो।

कालिका माता मंदिर। इनसेट में कालिका माता।

- आओ चोवाणां। जै आसापुराजी। कई है। सात दन सूं पधारिया हो नी। सभी त्यार्यां भलो-हां-हां। निज म्हेलां में कुण है? हां-हां-हां अंतरवास में कुण है? ठीक है बन्दोबस्त सब करा देवो। जनाना पधारे वांने पाछी डोड्यां सूं पूगतां करीजो।

पधारसी! भला-भला-भला। हां तो वांनै जै गुरु म्हाराज री कीजो नै अरज करजो कै म्हां दोई हाथ जोड़ी नै अरज करां। हां जरणी तो अन्तर में भी नै ऊपर भी बराजग्या है। वांनै अरज कर दीजो कै गुरु म्हाराज पधारे तो वांनै भी लेता पधारै। आपरे सब त्यारी है। ओर कई मांसवांस री त्यारी वे तो मानसिंहजी नै कै दीजो। नोसादखांजी रे वठै थांणी पंगत लगा लीजो। कोई मद पीयोड़ो

नाम मेताबसिंहजी राखियो। मेताबकुंवर राखियो व्हेतो तो कई व्हेतो? पेलां जा नै आया हो जो पतो पड़ियो नी नरक में रैवण रो कित्तो मजो आयो? कठै नपुंसकां री जमात भेरी करी है। अरे ना भला मेताबसिंहजी कुटाकुटी ना करो तो कूटूंकूटूंतो करो।

- पूरणसिंहजी नै भेजो तो म्हूं आपरो काम करी दूं। आओ भायां पूरणजी। जै कालीजी। मेताबसिंहजी नै डोड्यां में मेलो रे। वांनै तो नारी रा गाबा पैरादो। अबे आयोड़ा जीव नै कठै काड़ो?

- एक बात और केईदूं के डोड्यां रै दरवाजै है वांनै कै दीजौ के जनाना पधारे वांरै मान में कोई कमी नी राखै। जै कालीजी।''

लगभग साढ़ा ग्यारह बज रहे हैं। हमने जान लिया कि मेले की सारी व्यवस्था का जिम्मा कल्लाजी का है इसीलिए वे सारी जानकारी ले रहे हैं और फटाफट आवश्यक दिशानिर्देश दे रहे हैं। उनमें व्यवस्था सम्बन्धी कितना अनुभव, पैनी दृष्टि और प्रशासनिक क्षमता है और नारियों के प्रति कितना मान-सम्मान है। अपने सैनिकों के साथ उनकी कितनी आत्मीयता और पारिवारिकता है। वे किसी का दिल नहीं दुखाते हैं और रंग-व्यंग्य में कैसी चुटकी छोड़ते हैं। हर छोटी से छोटी बात का उन्हें

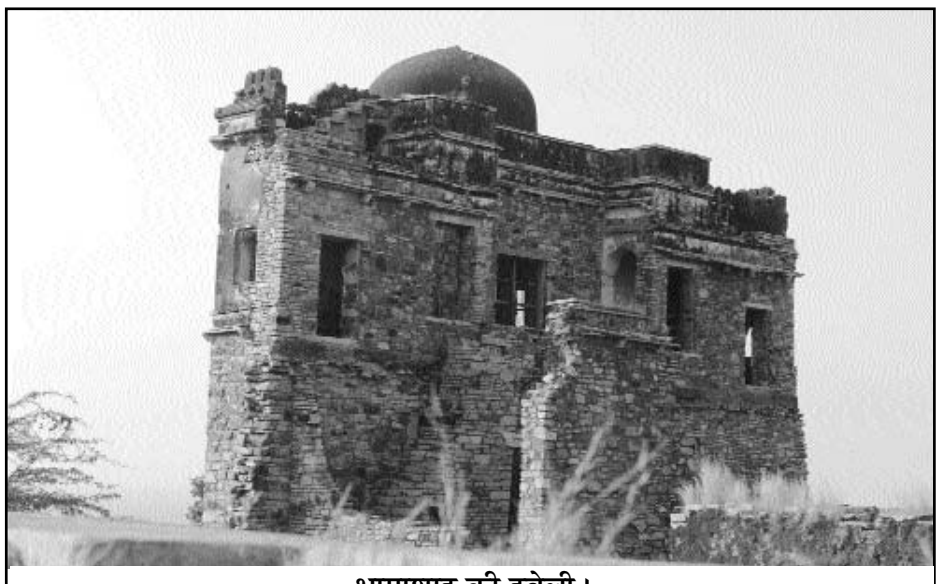

भामाशाह की हवेली।

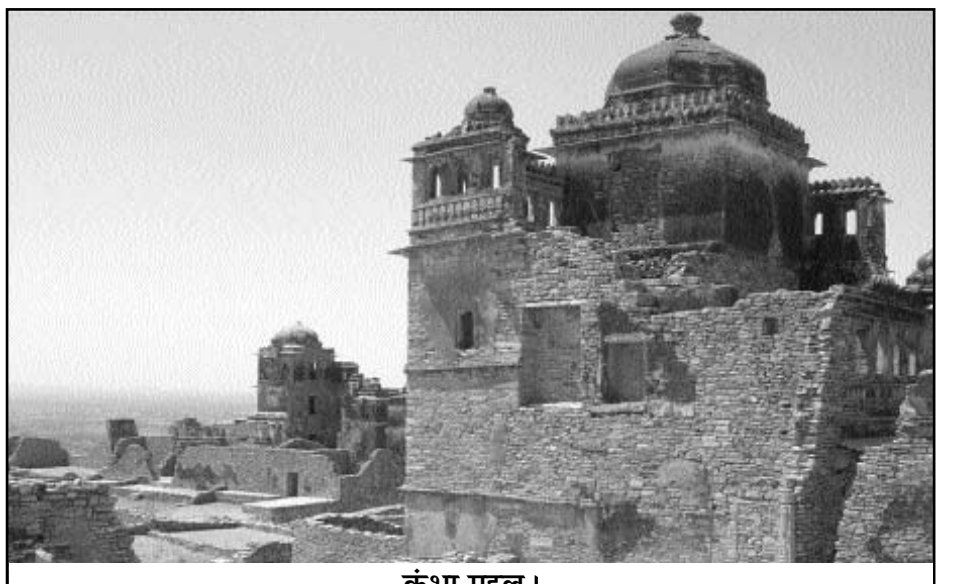

कुंभा महल।

-कासीबाई ने कीजै कै वांरो ध्यान रेवे हां भलो। रतनसिंहजी रे म्हेलां री तरफ कुण है? वठे 6 जणा कई करै रे? ठीक भला.... हां तो वांने कै दीजै कै मीणा नै वठेई रोक्या राखै। 6 जणा ने राख्या जो सोको कीदो।

- मानसिंहजी भेज्या है। वांरो बराबर देखणो वेइर्यो है। कठै गांजो पीने पड्यार्या तो कुटूंळो। मानसिंहजी फरमायो! हां भला, फाटक पर उबा रो।

- वक्तावरसिंहजी नै कीजै कै कल्यो आयो है। जनाना बराजे वांने जो चावै वांरो ध्यान राखै। कासी नै पोसाकां में मेली तो वठे कुण है? सिंगारी। सिंगारी नै पोसाकां में मेलो। कासी जूनी है।

- जै आसापुराजी। आप आपरे कामे लागो। जै माताजी। म्हारे कई नी चावै रे न-न-न म्हां तो भला ऊई ठीक हां रे। नायकजी आया है? वांनै म्हारो राम कीजो रे। बूड़ा जीव है। किण दरवाजे ऊबा हो? ठीक है-ठीक है। बस आज री रात नै काल री रात है। और कई है? कोई पधारणो चावे तो...

- नायकजी आप तो भुवा री घणी रक्षा करी। आपने कूंकर भूल सकां। नायकजी थाणी पागड्यांई फाटगी भला। हां म्हूं अरज कर देऊं। जै माताजी री। पधारजो।

- रामदेवजी! पीरजी पधार्या! कद खबर आई? कुण आयो? भाटीजी आया! ओ हो भलो भाग भला चित्तौड़ रो। कालै आवै तो वांनै तकलीफ पड़े। कोई बायां आई वे तो कासी नै कै दीजो।

- बतुलखारी! भला आ नारी अठै कां आई है? अणी नै बांबी में पाछी भेजदो। अभैसिंहजी नै कै दीजो कै नारी पर जुलम नी करै कलिये क्यो है। वांनै छटा करो। अरे नारी कई करे? नारी म्हारी मावड़ है वा कोई भी जात री वो।

- सलाम-सलाम-सलाम और कई तकलीफ वै तो म्हनै कीजो हो। मालक तो दूजा है। म्हूं तो ऊई थांणे भेरो बैठ्यो हूं।

- जै रघुनाथ री। मेताबसिंहजी थें तो भला रजपूत व्हिया भला। कई कैवां थांनै। अरे भला पण माथे रजपूती राखो। खाली

कितना ध्यान है। वे स्वयं कितने मर्यादित हैं और दूसरों की मान-मर्यादा का उन्हें कितना ख्याल है।

यह मेला दिव्यात्माओं का है। जो आत्माएं सद्गति में हैं वे सब इस मेले में सम्मिलित होती हैं। जितने भी अच्छे संत, सतियां, महापुरुष हुए हैं वे सब मेले में आते हैं। महाराणा मोकल के समय से इस मेले का प्रारम्भ हुआ। तबसे अब तक लगता आ रहा है। इस मेले में जगत्जननी जोगमाया सबको काम की जिम्मेदारी सौंपती है और पिछले दिये गये कार्य का लेखा-जोखा करती है।

**- शेष पृष्ठ सात पर**

# कोरोना टेस्टिंग के लिए बूथ मॉडल की अभिनव खोज

## वास्तुकार अनूप गुप्ते से डॉ. संजीव भानावत की बातचीत

**इस शोध में मुझे दक्षिण कोरिया का एक बूथ मॉडल बहुत ही प्रभावशाली लगा। मुझे लगा कि हम भारतीय परिवेश में इस आधार पर एक ऐसी तकनीक विकसित करें जिससे चिकित्सक आइसोलेशन में रहें और मरीज भी बिना एक दूसरे से संक्रमित हुए टेस्टिंग के लिए आगे आ सकें। लगभग तीन-चार दिन काम करते हुए इस तरह का बूथ मॉडल विकसित किया जिसमें एक साथ तीन व्यक्तियों का सैंपल लिया जा सके और इसमें न तो व्यक्ति एक दूसरे के संपर्क में आए और न ही डॉक्टर के साथ उनका संपर्क हो।**

**प्रश्न** - उदयपुर में आने और बसने की क्या पृष्ठभूमि रही?

**उत्तर** - 1994 में मैं अपने माता-पिता और छोटे भाई के साथ उदयपुर आया था। मूलत: हम लोग महाराष्ट्र में अमरावती के रहने वाले हैं लेकिन 1994 में पिताजी के साथ सपरिवार हम उदयपुर में शिफ्ट हो गए। यहीं मैंने द स्टडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की। उसके बाद मेरे लिए चुनौती थी उच्च शिक्षा के लिए विषय का चयन करना।

मेरे पिता श्री संजीव गुप्ते व्यवसाय से एक वास्तुकार हैं और मां श्रीमती अंजलि गुप्ते शिक्षाविद् हैं। मेरी परवरिश में माता-पिता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने मुझे इस दुनिया का यथार्थ-बोध कराया और यह भी सिखाया कि किस तरह से हम प्रश्न करें और इसी कारण से मेरे मन में एक शोध की प्रवृत्ति विकसित होने लगी।

**प्रश्न** - शोध की प्रवृत्ति और पहचान कैसे हुई?

**उत्तर** - मैंने बचपन में ही अपने पिता को एक वास्तुकार के रूप में देखा। प्रसिद्ध वास्तुविद् के रूप में देश भर में उन्होंने अनेक परियोजनाओं को बड़े कल्पनाशील और रचनात्मक तरीके से पूरा किया। हमारा कार्यालय हमारे ही निवास के परिसर में स्थित है, इसलिए मैं उनके कामकाज को बहुत निकटता से देखता रहा और मन ही मन वास्तुविद बनने का सपना भी संजोता रहा।

उदयपुर के ताज पैलेस होटल के नवीनीकरण जैसी परियोजनाओं के साथ भी वे जुड़े रहे। संभवत: उन्हीं के व्यक्तित्व का प्रभाव था कि मुझे इन भवनों, बिल्डिंग्स से भी धीरे-धीरे रोमांस होने लगा और यही कारण था कि मैं एक वास्तुकार बनने के सपने को लेकर जयपुर के आयोजन स्कूल ऑफ आर्किटेक्ट में 5 साल का यह पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए पहुंच गया। इसी संस्थान में मैंने डिजाइनिंग और लेआउट के मूल स्वरूप को समझा। डिजाइन के आदर्शों को आत्मसात किया।

**प्रश्न** - फिर क्या अनुभव किया?

**उत्तर** - इसी दौरान मुझे अपनी भावी पत्नी रूचिरा से भी मिलने का सौभाग्य मिला जो स्वयं भी शिक्षाविदों के परिवार से संबंध रखती है। स्नातक स्तर की पढ़ाई पूरी कर मैं अहमदाबाद के प्रतिष्ठित नेशनल इंस्टिट्यूट

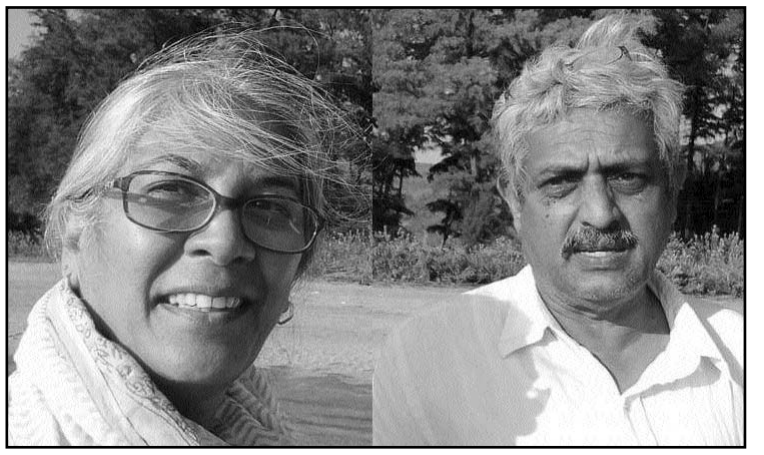

ऑफ डिजाइन (राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान) में फर्नीचर डिजाइनिंग में मास्टर्स करने के लिए जा पहुंचा।

यह भी एक अद्भुत संयोग था कि मेरे पिताजी ने भी इसी संस्थान से अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। इसी पाठ्यक्रम के

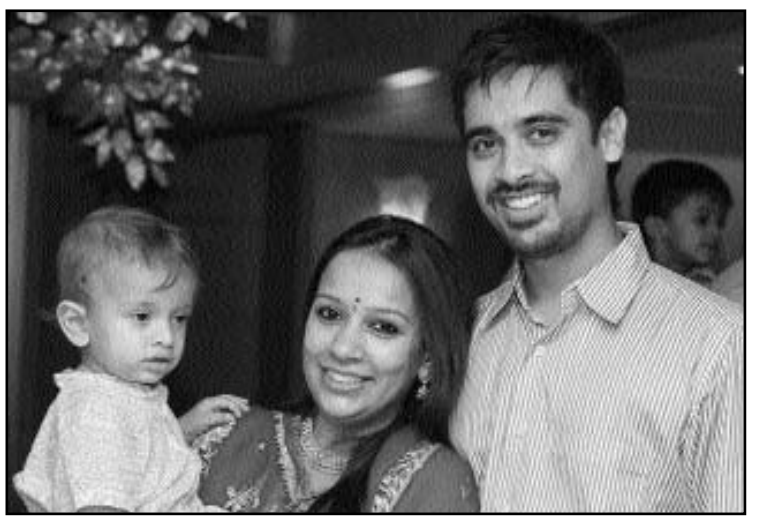

दौरान एक सेमेस्टर के लिए मुझे जर्मनी जाने का मौका मिला जहां मैंने डिजाइनिंग के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय अनुभव प्राप्त किया। मास्टर्स पाठ्यक्रम पूरा होने के बाद मुझे गोदरेज इंटीरियर्स में काम करने का मौका मिला, जहां मैंने फर्नीचर के क्षेत्र में आधुनिकतम तकनीक को देखा व समझा और उसका व्यापक अनुभव प्राप्त किया।

मैंने उस दौरान स्कूल और कालेजों के लिए बहुत बड़े पैमाने पर फर्नीचर तैयार किया जिसे विशेष रूप से सराहा गया। अंतत: मैंने वहां से नौकरी छोड़ कर अपने पिताजी के साथ ही निजी व्यवसाय को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

**प्रश्न** - पिताश्री के साथ के अनुभव को कैसे लेते हैं?

**उत्तर** - मैंने पत्नी रुचिरा के सहयोग से वास्तुकला के क्षेत्र में एक नई शोध और अनुसंधान की दिशा में कुछ करने का संकल्प लेकर पिताजी के मार्गदर्शन में आगे बढ़ने की शुरुआत की। हमने पिताजी के साथ ही उदयपुर के सज्जनगढ़ जैविक उद्यान और मैसूर में जेके टायर्स के लिए एक विशिष्ट अनुसंधान विकास केंद्र के प्रोजेक्ट को पूरा किया।

मैसूर का यह केंद्र रघुपति सिंघानिया उत्कृष्टता केंद्र के रूप में आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जाना जाता है। इसी प्रकार हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड के लिए जावर माइंस में रेजिडेंशियल फुटबॉल अकादमी के प्रोजेक्ट को भी हमने पूरा किया। इन कल्पनाशील और रचनात्मक प्रयोगों के कारण हमने एक विशेष पहचान वास्तुकला के क्षेत्र में स्थापित कर ली थी।

**प्रश्न** - बूथ मॉडल की खोज को कैसे रेखांकित करते हैं?

**उत्तर** - इसी बीच एक ऐसा संकट पूरी दुनिया के सामने आया जिसने पूरी मानवता को हिला दिया और यह संकट था कोरोना वायरस का। दुनिया के विभिन्न देशों पर इस वायरस के आक्रमण से देखते ही देखते लाखों लोग संक्रमित होते चले गए और कई हजार लोगों ने इस बीमारी के कारण अपने प्राण त्याग दिए।

मेरा युवा मन इन परिस्थितियों को देखकर बहुत विचलित हुआ। जब मैंने देखा किस तरह से कोरोना वायरस जिसे पेंडमिक घोषित किया गया था, लोगों को संक्रमित कर रहा है। यदि व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के संपर्क में आता है तो तुरंत संक्रमित हो जाता है। मैंने यह महसूस किया कि हमारे देश में टेस्टिंग के सैंपल लिए जा रहे हैं उसमें भी संक्रमण का खतरा डॉक्टर्स के लिए बढ़ता जा रहा है। मेरा मन कुछ ऐसा करना चाहता था।

एक वास्तुकार के रूप में मैं समाज को कुछ ऐसा दे सकूं जहां इस वायरस की चुनौती से निपटने के लिए मेरा एक विनम्र योगदान हो सके और यही सोच कर मैंने इस दिशा में सोचना शुरू किया और मेरी इस शोध में मुझे दक्षिण कोरिया का एक बूथ मॉडल बहुत ही प्रभावशाली लगा। मुझे लगा कि क्यों नहीं हम भारतीय परिवेश में इस आधार पर एक ऐसी तकनीक विकसित करें जिससे चिकित्सक आइसोलेशन में रहें और मरीज भी बिना एक दूसरे से संक्रमित हुए टेस्टिंग के लिए आगे आ सकें। बस मैंने लगातार लगभग तीन-चार दिन इसी दिशा में काम करते हुए इस तरह का बूथ मॉडल विकसित करने की ठानी जिसमें एक साथ तीन व्यक्तियों का सैंपल लिया जा सके और इसमें न तो व्यक्ति एक दूसरे के संपर्क में आए और न ही डॉक्टर के साथ उसका संपर्क हो। हम सुरक्षित तरीके से इस पूरी सैंपल तकनीक को क्रियान्वित कर सकें और अंतत: मुझे इसमें सफलता मिली।

**प्रश्न** - इसे थोड़ा और स्पष्ट करें?

**उत्तर** - गुप्ते ने इसे स्पष्ट करते हुए बताया कि हम किसी भी खाली पड़े स्थान पर लगभग 40 बाई 40 फीट के परिसर में फोन बूथ मॉडल को अपना सकते हैं। इस मॉडल के तहत डॉक्टर आइसोलेशन में रह कर अपना काम करते हैं और उनके सामने 3 बूथ होते हैं। इन बूथों में क्रमश: रोगी आ सकते हैं। डॉक्टर एक-एक कर इनका सैंपल ले सकते हैं।

एक रोगी के बाहर जाते ही उस कंपार्टमेंट को तुरंत डिसइनफेक्ट किया जाता है। जब तक वह कंपार्टमेंट डिसइनफेक्ट होता है तब तक दूसरे कंपार्टमेंट में रोगी का सैंपल लिया जा सकता है। इस तकनीक में डॉक्टर और रोगी का किसी प्रकार से कोई संपर्क नहीं होने के कारण संक्रमण होने का खतरा नहीं है। इस तकनीक में रोगियों को भी एक दूसरे से संक्रमित होने से रोका जा सकता है।

**प्रश्न** - इस तकनीक के क्या लाभ होंगे?

**उत्तर** - गुप्ते का मानना है कि इस तकनीक के माध्यम से परीक्षणों की संख्या में काफी अधिक वृद्धि की जा सकती है । दक्षिण कोरिया में लॉकडाउन की अवधि को कम करते हुए इस तकनीक का उपयोग करते हुए परीक्षणों की संख्या में काफी वृद्धि कर कोरोना वायरस को नियंत्रित करने की दिशा में कारगर कदम उठाए गए थे । उन्होंने यह प्रोजेक्ट प्रधानमंत्री के पोर्टल सहित तथा राज्य के प्रमुख अधिकारियों को भी भेजा है । उनका यह दावा है इस तकनीक से स्वास्थ्यकर्मियों को संक्रमित होने से बचाया जा सकता है।

## कहावतों के कहकहे (14)

(128) गांड में तो गू ई नीं नै कागला ने हाइदै

(129) चौदू न संख पराई फूंक ऊं वाजै

(130) चौदू रो माल मसखरा खावै

(131) देवा लेवा रो काम चूतिया रो मरदां री तो मोबत ही भली

(132) मरद री मौत गांडू हाथै

(133) रींछ रा ढूंगा में केस री कई कमी

(134) वांगरो बलद फलै़ न फल़वा दै

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 15 अप्रेल 2020

## सम्पादकीय

# कोरोना का संकट और बाहरी दुनिया से हमारा कट

इस शांतिप्रिय देश को अशांत करने वाले तत्व हर युग में हावी रह अपना जौहर दिखाते रहे। यहां के लोगों ने हर बीमारी को बड़े सहिष्णु भाव से सहा और मौका देखकर नकटी कर विदा किया। अकाल, महामारी, फ्लेग, हैजा, प्रलय जैसी बीमारियां झेलीं। अनेक भांति के शारीरिक रोगों ने भी आक्रमण किये तो ऊपर की हवा के कारण अदृश्य रोगों ने भी बड़ा तूफान मचाया किन्तु सब 'थोथा चना बाजे घना' की तरह थोड़े समय के मेहमान बन बुरी तरह परास्त हो मुंह की खाते बने।

बुरा वक्त धमालपट्टी तगड़ी करता है पर अधिक समय नहीं रहकर अन्ततोगत्वा उसे नौ दो ग्यारह होना पड़ता है। कोरोना जैसी मांदगी पहली बार आई और पूरे विश्व को तबाह कर दिया। अपने को तीसमारखां समझने वाले देश भी 'उलट पयानो सीन' दिखाते हारे को हरिनाम हुए लग रहे हैं। ऐसे में अकेला और अकेला भारत विनम्रतापूर्वक आत्मानुशासन की वेतरणी खे रहा है।

शांति के समय जो देश सबसे पीछे था वह कोरोना जैसी हाहाकार भरी उथल-पुथल की बेचैनी के बीच दुनियां की निगाहों में सबसे ऊपर कमलवत बना हुआ है। कोरोना के प्रति हमारी जूझ खत्म नहीं हुई है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उसके द्वितीय चरण की सीमा 03 मई तक बढ़ा दी है। सबको घरों में ही अपने परिजनों के साथ रहना है।

नरेन्द्र मोदी के पास समय की आहट को सूझबूझ के साथ समझते हुए सबके साथ सबका विकास जैसे बीजमंत्र को उर्वर बनाने की जबर्दस्त क्षमता, साहस तथा जन सान्निध्य हांसिल है। वे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की उस भूमिका को सार्थक कर रहे हैं जिसके लिए कहा गया था- 'चल पड़े जिधर दो डग मग में चल पड़े कोटि पग उसी ओर।' भारतवंशियों के लिए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का यह कथन याद आ रहा है-

यदि बाधाएं हुईं हमें तो उन बाधाओं के ही साथ।
जिससे बाधा बोध न हो वह सहनशक्ति भी आई हाथ।।

हमें कोरोना का रोना नहीं रोना है। रोना तो कोरोना को ही है। हमें अपनी आत्म-क्षमता, आत्म-संयम तथा आत्म-रक्षा करते हुए उसे विदा देना है।

कोरोना को लेकर एक पाठक की प्रतिक्रिया का स्वागत करते उसे यहां प्रकाशित कर रहे हैं-

धन्तूरे ने छेड़ दिये हैं, सारंगी के तार।
बेताला बेसुर अलबेला, कौन क्षितिज के द्वार।।
नदी न दीखे और किनारे, सागर सा उफान।
बेशर्मी बेहद की लेकर, मचा रहा तूफान।।
नटखट नहीं बताता अपनी, कौन देश पहचान।
अधमरी मछुरी जैसी, अटक गई है जान।।
अणबोली लेली सबने ही, जगह-जगह धिक्कार।
कहीं नहीं है जगह सगबगे, हर कोना दुत्कार।।
अपनी ही चौपाल अपनी ही शोभा होती भारी।
काला मुंह उसका होता, जो होता अत्याचारी।।
है सदा विजय का शंख, फूंकती यह धरती आई है।
रामायण और महाभारत की, धर्म ध्वजा लाई है।।
गंगा जमुना की धार यहां, आधार सदा ही बनी हुई।
छतरी की डांडी शेषनाग थामे, रक्षा में तनी हुई।।
भारत में रहकर भारत की, नमकहरामी जो करता है।
देशद्रोह की ज्वाला में, खुद ही जलता खुद ही मरता है।।
यहां स्नेह सौहार्द शांति का, स्त्रोत सदा बहता है।
दूध उफनता जल का छींटा, भारत ही देता है।।

# खांसी : वह और यह

**-डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत-**

कोरोना का संदर्भ चला तो बचपन की एक घटना याद आ गई। ग्रामीण भारत का यह दृश्य सामान्य था कि परिवार का मुखिया परिवार के सदस्यों से एक निश्चित दूरी बनाए रखता था। घर का बुजुर्ग बहुओं और पत्नी को नाम से नहीं बुलाता था। परिवार के सदस्यों से संवाद बनाए रखने के लिए खांसी को माध्यम बनाता था।

भैरूलालजी भाणावत

यह खांसी कृत्रिम हुआ करती थी। घर की दहलीज पर पैर रखते ही जोर से खांसना यानी बाउसा (दादाजी) भैरूलालजी पधार गए हैं। खांसी एक प्रकार की पुकार-संकेत थी। बाउसा यदि एकबार खांसते थे तो इसका मतलब होता था बाऊसा को पानी का लोठा चाहिए। दो बार खांसते थे तो बाउसा को नाश्ता चाहिए था। यदि लगातार खांसते रहते थे तो इसका मतलब होता कमरे में आ जाओ, कुछ काम है। खांसना बीमारी नहीं थी अपितु पुत्रवधू या बच्चों को बुलाने का माध्यम था। बच्चों को जब लगता कि रात को बाउसा सो गए तो जोर-जोर से चिल्ला कर खेलते थे ऐसे में अचानक बाउसा की खांसी का गुबार उठता था और घर में बच्चापार्टी शांत हो जाती थी।

बाउसा बोलते थे, मैं सोया नहीं हूं। सब सुन रहा हूं। घर की बहुएं भी उस खांसी को सम्मान देती थीं। एकबार तो बाउसा पोल के किंवाड़ की सांकल जोर-जोर से बजाने लगे तब घर के सभी सदस्य इकट्ठे हो गए और पूछा सांकल क्यों बजा रहे हो? कहने लगे, कमबख्त गला ज्यादा ही गड़बड़ है। खांसी नहीं आ ही है। मुझे कुछ काम था। जब अंतिम बार वास्तव में खांसी आई तो उनकी आंखों में पानी था और घर को सदा के लिए छोड़ कर चले गए।

किसी को कोई भनक नहीं पड़ी। दादीजी तो उनके पूर्व ही चले गये थे। पूरा गांव और सगे समधी इस अप्रत्याशित घटना से सन्न रह गये थे। यह घटना सन् 1985 की है तब बाउसा 60 वर्ष के थे।

आज की स्थिति से जब तुलना करता हूं तो सोचता हूं यदि आज बाउसा जिंदा होते और एक कोने में खांसते रहे होते तो घर का दूसरा कोना कांप उठता। उनके खांसने पर शायद ही कोई पानी या नाश्ता लाता। सामाजिक दूरियां जस की तस बनी रहतीं। अकेले ही खांसते रहते। कोरोना के चलते वे अपना मुंह ढककर सो जाते।

कोरोना की वजह से आज खांसी का मतलब सामाजिक दूरी बनाये रखने का हो गया है। उस खांसी में स्नेह सौहार्द और बड़ों के प्रति आदर तथा सम्मान का भाव था। एक पूरे संस्कार का सरोकार था। यह धारा विलुप्त नहीं हुई है। आज भी गांवों में खांसी उसी तरह अपनी पहचान बनाए हुए बड़ों का सम्मान और पारिवारिक अनुशासन बनाए हुये है।

# खाद्य सामग्री के 51 पैकेट वितरित

**उदयपुर (विज्ञप्ति)।** तप सम्राट पूज्य केशुलालजी महाराज की प्रेरणा से केशवधाम सेवा संस्थान उदयपुर द्वारा कोरोना जैसी महामारी में लॉकडाउन से परेशान लोगों को खाद्य सामग्री के 51 पैकेट घर-घर जाकर वितरित किये गए।

पैकेट में दाल, चावल, आटा, तेल, शक्कर, चायपत्ती, मसाला इत्यादि खाद्य सामग्री थी। सम्पत बापना ने बताया कि यह सेवाकार्य संस्थान अध्यक्ष महेश बम्ब, वार्ड 54 पार्षद रुचिका चौधरी, मुकेश सेन, कमलेश बम्ब, राकेश चौधरी, एडवोकेट भुवनेश जोशी द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर पर णमोकार जाप कर विश्व में आई इस महामारी से मुक्ति हेतु प्रार्थना की गई।

# इंडियापेसेफ की शुरुआत

**उदयपुर (विज्ञप्ति)।** नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन इंडिया (एनपीसीआई) ने लॉकडाऊन में लोगों को डिजिटल माध्यम से सुरक्षित भुगतान के बारे में शिक्षित करने के लिए यूपीआई चलेगा अभियान द्वारा इंडियापेसेफ की शुरुआत की है।

डिजिटल भुगतान के बारे में जागरुकता बढ़ाने के लिए एनपीसीआई ने यूपीआई चलेगा अभियान की मुख्य पात्र मिसेज राव को प्रस्तुत किया है जो लोगों को लॉकडाऊन के दौरान कैशलेस व सुरक्षित रहने के लिए शिक्षित करेंगी। अपने 6 वीडियो में एनपीसीआई मिसेज राव के माध्यम से महत्वपूर्ण सेवाओं जैसे फोन, रिचार्ज, मनी, ट्रांसफर, ग्रोसरी एवं मेडिकल स्टोर, स्टाफ का वेतन आदि के भुगतान के लिए यूपीआई के उपयोग के बारे में बताएगा। मिसेज राव भीम यूपीआई ऐप का उपयोग कर लोगों से पीएम केयर्स फंड में योगदान देने का आग्रह भी करेंगी।

वीडियो में मिसेज राव सोशल डिस्टैंसिंग बनाए रखने के महत्व पर बल देंगी और वो लॉकडाऊन की अवधि में घर पर बैठकर डिजिटल रूप से भुगतान करने की जरूरत लोगों को समझाने का प्रयास करेंगी। एनपीसीआई इन्फ्लुएंसर्स, सोशल मीडिया, ओटीटी प्लेटफार्मस् एवं इंपैक्ट प्रॉपर्टीज के साथ मिलकर काम कर रहा है।

# हार्ट रोगियों को अधिक सावधानी की आवश्यकता : डॉ. पुरोहित

**उदयपुर (विज्ञप्ति)।** पारस जे. के. हॉस्पिटल के कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. सी. पी. पुरोहित ने कहा कि कोरोना वायरस हार्ट के रोगियों के लिए ज्यादा खतरनाक है।

डॉ. पुरोहित ने बताया कि सोश्यल डिस्टेसिंग रखते हुए बार-बार हाथ धोना एवं घर से बाहर नहीं निकलना तो सभी के लिए बहुत जरुरी है लेकिन ऐसे रोगी जिनको हार्ट फेलियर व हार्ट के पंपिग जैसी समस्याएं हैं वे उपरोक्त सावधानियों के अलावा अपनी दवाइयां

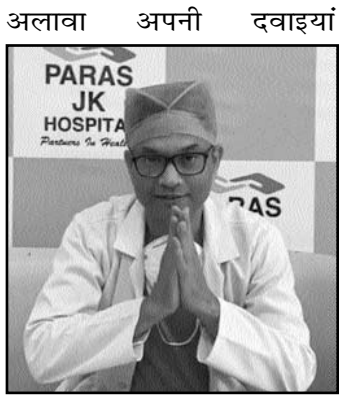


नियमित लें। इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतें ताकि वे स्वस्थ्य जीवनयापन कर सकें।

उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की समस्या होने पर घबराना नहीं चाहिये क्योंकि घबराने से समस्या बढ़ जाती है। समस्या बढ़ने पर तुरंत अस्पताल पहुंचें। अस्पताल 24 घंटे खुले रहकर जन सेवा के लिए कटिबद्ध हैं। सभी चिकित्सक समाज को कोरोना से बचाने के लिए रात-दिन काम कर रहे हैं।

# सत्ता एवं रसूखदारों के चक्रव्यूह में फंसता यस बैंक

**-डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत-**

लाभदायकता एवं तरलता में सामंजस्य बैठाकर ही किसी व्यावसायिक संस्थान को दीर्घ अवधि तक जीवित रखा जा सकता हैं। पर्याप्त लाभ होने के बावजूद तरलता का उचित प्रबंध न करने के कारण संस्थायें दिवालियापन की स्थिति में आ जाती हैं। यस बैंक इसका जीता जागता उदाहरण है। यदि यस बैंक के 2018-19 के वार्षिक प्रतिवेदन पर नजर दौड़ायें तो हम पाते हैं, बैंक के पास 31 मार्च 2019 को 2 खरब, 64 अरब, 41 करोड़, 18 लाख, 95 हजार का रिजर्व पड़ा हुआ है।

2018 -2019 का परिचालन लाभ 81 अरब, 39 करोड़, 40 लाख, 70 हजार का हुआ। इसी वर्ष शुद्ध ब्याज की आय 98 अरब, 9 करोड़, 3 लाख, 10 हजार रुपए हुई। वर्ष 2018-19 में 6 अरब, 22 करोड़, 40 लाख, 89 हजार रुपए का लाभांश अंशधारियों को वितरित किया। जमायें 2014 की तुलना में 2019 में 206.78 प्रतिशत तथा एडवांसस में 334 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई जबकि लागत लाभ के अनुपात में 5 वर्षों में केवल 4.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। वर्ष 2018 में बैंक को विभिन्न क्षेत्रों में उम्दा प्रदर्शन के लिए 8 अवार्ड प्राप्त हुए।

इतने सुखद वित्तीय परिणामों के बावजूद आज यस बैंक अपने खाताधारकों को पैसा चुकाने में असमर्थ है। बैंक ने 50,000 की मासिक से अधिक निकासी पर प्रतिबंध लगा दिया। निवेशक एवं खाताधारक तो बैंक की बैलेंस शीट देखकर ही विनियोग करते है। ऐसी आकर्षक बैलेंस शीट को देखकर कौन विनियोग नहीं करना चाहेगा। इतनी मजबूत वित्तीय स्थिति के बाद भी यस बैंक का ढहना संपूर्ण लेखांकन प्रणाली पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है। इसके साथ लेखांकन की अपेक्स संस्थान सीए इंस्टिट्यूट भी संदेह के दायरे में आ जाती है। प्रश्न यह उठता है कि यह हुआ कैसे? क्या बैंक ने बाजार में अपनी ब्रांड इमेज बनाने के लिए क्रिएटिव लेखांकन का सहारा लिया? क्या एक बैंक द्वारा आभासी दुनिया का निर्माण किया गया? अब हम यह रहस्य खोजने का प्रयास करते हैं।

यद्यपि बैंक का लाभ लगभग 81 अरब, 39 करोड़, हैं किंतु इसका 48 प्रतिशत ( 39 अरब, 3 करोड़, 34 लाख, 83 हजार) हिस्सा उपार्जित ब्याज का है। यह वह आय है जो प्राप्त नहीं हुई, किंतु आय का हिस्सा मान लिया गया क्योंकि वर्ष 2018-2019 में बैंक ने उपार्जित कर लिया। अर्थात् बैंक ने जिनको ऋण दिया वे उस ऋण पर ब्याज देने के लिए दायी हो गये किंतु 31 मार्च तक चुकाया नहीं। लेखांकन के उपार्जन अवधारणा के आधार पर इसको बैंक ने आय मान लिया जो लेखांकन की दृष्टि से उचित है लेकिन इससे तरलता का संकट पैदा हो गया।

ऋण देने में कंपनी के सह-संस्थापक राणा कपूर का हाथ माना जा रहा है। राणा कपूर ने क्रिएटिव लेखांकन के माध्यम से बैंक की एक कृत्रिम ब्रांड इमेज बनाने का प्रयास किया। मसलन वार्षिक प्रतिवेदन में संचय की राशि अच्छी दिखायी, लाभांश का भुगतान निरंतर किया ताकि अंशधारियों का विश्वास बना रहे। अच्छे लाभ दिखाए जबकि वास्तव में हालात खराब थे। राणा कपूर ने राजनीति रसूखदारों को भी ऋण दिलवाया। मुंबई के एक बीजेपी विधायक को भी ऋण दिया जिन्होंने ऋण चुकाया नहीं। राणा कपूर ने न केवल समृद्ध कॉर्पोरेट घरानों में अपनी साख जमाई अपितु अपने आप को राष्ट्रवाद का प्रहरी बताकर वर्तमान सरकार का भी विश्वास जीता।

प्रधानमंत्री का 5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था का जुमला भी राणा कपूर ने ही सुझाया था। जब

प्रधानमंत्री ने 8/11/2016 को नोटबंदी का ऐलान किया तब भी राणा कपूर ने प्रधानमंत्री का इसे मास्टर स्ट्रोक बताकर प्रशंसा की थी। इस तरह राणा कपूर धीरे-धीरे सत्ता के करीब आते गए। बैंक ने ऐसी कंपनियों को ऋण दिया जो पहले से ही कर्ज के तले दबी हुई थी। इनमें मुख्य रूप से कॉक्स एंड किंग्स, कैफे कॉफी डे, दीवान हाउसिंग प्रा. लि., जेट एयरवेज, अनिल अंबानी की कंपनियां तथा आई एल एफ एस हैं।

पुण्य प्रसून ने अपने वेब उद्बोधन में बताया कि अनिल अंबानी ने तो देश के कई नामी बैंकों से ऋण ले रखा है। मसलन एसबीआई से 1965 करोड़ रुपए, यूनियन बैंक से 1556 करोड़ रुपए, आईसीआईसीआई बैंक से 1375 करोड़ रुपए, एक्सिस बैंक से 783 करोड़ रुपए, बैंक ऑफ बड़ौदा से 847 करोड़ रुपए, यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया से 582 करोड़ रुपए, पीएनबी से 682 करोड़ रुपए, ओबीसी से 546 करोड़ रुपए, बैंक ऑफ इंडिया से 503 करोड़ रुपए यूको बैंक से 468 करोड़ रुपए, कॉरपोरेशन बैंक से 319 करोड़ रुपए, एवं पंजाब एंड सिंध बैंक से 376 करोड़ रुपए का ऋण ले रखा है।

अकेले अनिल अम्बानी ने इतना लोन ले रखा है जबकि उनकी वित्तीय स्थिति ठीक नहीं है। यदि रसूखदारों के प्रति सरकार सख्त नहीं हुई तो बैंकिंग सेक्टर ताश के पत्तों की तरह ढहने में वक्त नहीं लगायेगा।

यह वह कंपनियां हैं जिनके संस्थापक सत्ता पक्ष के अत्यंत करीबी हैं। यहां यह शंका उत्पन्न होती है, जब कंपनियां कर्ज में डूबी हुई थी और स्वयं ये कंपनियां जब अपने ही पतन की इबादत लिख रही थी फिर भी ऋण दिया गया। कहीं सत्ता पक्ष की अनुशंसा तो नहीं थी या फिर भ्रष्टाचार चरम सीमा पर तो नहीं था?

इन कंपनियों द्वारा ऋण एवं ब्याज की राशि समय पर न चुकाने के कारण यस बैंक में तरलता का संकट पैदा हो गया। ये कंपनियां अपने ऋणों का भुगतान कैसे करती? एक तरफ बाजार में आर्थिक स्लोडाउन की स्थिति, दूसरी तरफ यह कंपनियां स्वयं कर्ज़ चले दबी हुयी है। यद्यपि बैंक के पास पर्याप्त लाभ हैं किंतु खाताधारकों को नकद भुगतान करने की स्थिति में नहीं है।

तरलता का संकट इतना गहराता गया कि दिन प्रतिदिन की परिचालन क्रियाओं के लिए नकद राशि नहीं थी। बैंक का नकद प्रवाह विवरण देखें तो पता चलता है कि परिचालन क्रियाओं से नकद प्रवाह 2 खरब, 46 अरब, 61 करोड़, 16 लाख, 64 हजार ऋणात्मक था। अर्थात् इस ऋणात्मक राशि की व्यवस्था दीर्घकालीन वित्तीय स्त्रोतों से की जो लेखांकन के आधारभूत नियमों के विरुद्ध है। इस तरह बैंक परिचालन क्रियाओं को आकर्षक बनाए रखने के लिए 2018-19 में वित्तीय गतिविधियों से 3 खरब, 30 अरब, 39 करोड़, 32 लाख, 24 हजार जुटाये।

यही नहीं सार्वजनिक क्षेत्र की सुदृढ़ कंपनी एलआईसी को भी संकट में डालने का प्रयास किया गया। जब यस बैंक के प्रति अंश का बाजार भाव 500 था तब एलआईसी को 9 प्रतिशत अंश खरीदने के लिए मजबूर किया। आज शेयर का मूल्य लगभग 15 रह गया है । इस तरह एलाईसी को भारी नुकसान हुआ। नियमानुसार एलआईसी किसी भी कंपनी में 9 प्रतिशत से अधिक अंश नहीं खरीद सकती है। राणा कपूर ने 20 से अधिक शैल (फर्जी) कंपनियां बना रखी थीं। ऐसा माना जा रहा है कि यह शख्स ऋण देने के बदले प्राप्त रिश्वत को इन कंपनियों में हस्तांतरित करके बाजार में निवेश करता था। वर्तमान में इन कंपनियों का बाजार मूल्य लगभग 5000 करोड़ रुपए माना जा रहा है।

बैंक का लाभ हानि खाता एवं आर्थिक चिट्ठा उन घटनाओं को नहीं दर्शाता जिनमें तरलता प्रभावित होती है। यह वित्तीय विवरण यह भी नहीं दिखाता है कि वर्ष पर्यंत बैंक कोषों का उपयोग कहां कहां हुआ। इसलिए निवेशक एवं खाताधारकों को निवेश करने से पहले उस संस्था के नकद प्रवाह विवरण का अवलोकन करना चाहिए।

इस तरह 21 लाख खाताधारकों एवं 18,238 कर्मचारियों का यस बैंक ने अपने पतन की कहानी का मर्म भी नकद प्रवाह विवरण में छुपा रखा था मगर नियामक संस्थाओं ने नजर अंदाज किया। बैंक ने नियामक संस्थाओं को भी अंगूठा दिखा कर देश की जनता के साथ धोखा किया।

## आईबीआर ने बांटे पुलिसकर्मियों को मास्क व सेनेटाईजर

**उदयपुर ( विज्ञप्ति )।** कोरोना वायरस को लेकर आमजन भयभीत है और प्रशासन

द्वारा किये गये लॉकडाउन से सब घरों में है। हमारे चिकित्सक, स्वास्थ्यकर्मी, प्रशासन, पुलिसकर्मी आदि सजगता से देश को इस आपदा से बाहर निकालने में जुटे हैं। इंडिया बुल राईडर्स ने लेकसिटी के सभी चौराहों पर जाकर वहां पर ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों को मास्क, सेनेटाईजर, ग्लव्ज व पानी की बोतलें बांटी।

इंडिया बुल राईडर्स (आईबीआर) उदयपुर के चेप्टर मोड पवन खाब्या व देवेन्द्रसिंह बोयल ने बताया कि कोरोना वायरस को लेकर किये गये लॉकडाउन में पुलिसकर्मी मुस्तैदी से जुटे हुए हैं। उदयपुर शहर के सभी चौराहों व अन्य स्थानों पर तैनात पुलिसकर्मी एवं अन्य भी बड़ी मुस्तैदी से अपना काम कर रहे हैं। इसलिए आईबीआर उदयपुर की ओर से मास्क, सेनेटाईजर, ग्लव्ज व पानी की बोतलें बांटी गई और पुलिसकर्मियों को इनकी सजगता के लिए धन्यवाद दिया गया। इस अवसर पर शैलेश ब्रिजवानी, नरेश माली व प्रियंक खन्ना भी मौजूद थे।

## 31 हजार भोजन पैकेट एवं 450 राशन किट वितरित

**उदयपुर ( विज्ञप्ति )।** नारायण सेवा संस्थान द्वारा गरीब, दीन हीन मजदूरों व उनके परिवारों में भोजनसेवा पहुंचाने का बिना थके सिलसिला गली-बस्ती जारी है।

अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि संस्थान की 50 लोगों की टीम भोजन सेवा और राहत के काम में दिन रात लगी है। संस्थान की टीम पिछले 15 दिन में अब तक 31500 से ज्यादा गरीबों को भोजन पैकेट और 9500 से अधिक फेस मास्क बांट चुकी है साथ ही अति गरीब जरूरतमन्द मजदूर परिवारों को 450 भोजन सामग्री किट वितरित किये हैं।

निदेशक वंदना अग्रवाल ने कहा कि गरीबों की जरूरतों को देखते हुए संस्था ने विशेष खाद्य राशन किट तैयार किये हैं जिसमें एक माह की खाद्य सामग्री है।

# वेदांता ने अपने योगदान को बढ़ाकर 201 करोड़ किया

**उदयपुर ( विज्ञप्ति )।** वेदांता ने प्रधानमंत्री नागरिक सहायता और आपातकालीन स्थिति (राहत-बचाव) कोष में अपने पूर्व के 100 करोड़ के कोष को दूगुना कर अब 201 करोड़ का योगदान दिया है जो देश भर में बड़े पैमाने पर समुदायों को राहत के उपाय प्रदान करने के सहायक होगा।

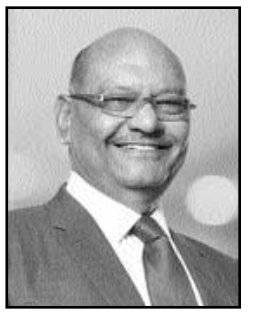

पीएम-केयर फंड में यह योगदान वेदांता के 100 करोड़ के कोष बनाने की पूर्व की पहल की प्रतिबद्धता को पूरा करेगा, जो तीन विशिष्ट क्षेत्रों में पूरे देश में दैनिक आजीविका वाले श्रमिकों की भोजन सहायता, निवारक स्वास्थ्य देखभाल के साथ साथ कंपनी के विभिन्न संयंत्र स्थानों एवं आसपास के समुदायों को सहायता प्रदान करेगा। विशेष रूप से इस कोष को गरीब और असहाय जरूरतमंद वर्गों पर इस महामारी से आए भोजन के संकट एवं 50 हजार घुमंतु पशुओं को प्रतिदिन आहार देने में उपयोग में लिया जाएगा।

वेदांता के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने कहा कि यह सुनिश्चित करना हमारी जिम्मेदारी है कि कोई भी भूख से न मरे। उन्होंने सरकार से अपील की कि प्रवासी मजदूरों को अगले तीन महिनों के लिए हर महिने कम से कम 8,000 रुपये प्रदान करें। श्री अग्रवाल ने कहा कि यह लघु और मध्यम एवं महत्वपूर्ण उद्योगों के लिए भी महत्वपूर्ण है, जो देश की अर्थव्यवस्था को बनाए रखने में योगदान देते हैं तथा 25 प्रतिशत कार्यबल के साथ काम करते हैं, क्योंकि वे आवश्यक सेवाएं हैं और निरंतर प्रक्रिया की श्रेणी में हैं और वे सभी सुरक्षा और स्वच्छता, विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निधारित मानदंडों का पालन करते हैं।

स्वास्थ्य देखभाल की सुविधा उपलब्ध कराने के तहत् वेदांता द्वारा केंद्रीय वस्त्र मंत्रालय के साथ अनुबंध कर देश में ही पीपीई निर्माण के लिए चीन से 23 मशीनों का आयात करना सुनिश्चित किया है। पिछले एक सप्ताह में वेदांता ने ग्रामीण समुदायों में 1 लाख से अधिक मास्क और 15500 से अधिकक साबुन और सेनेटाइजर प्रदान किए।

# टैफे ने छोटे किसानों को मुफ्त ट्रैक्टर किराये पर उपलब्ध कराये

**उदयपुर ( विज्ञप्ति )।** राजस्थान के छोटे और सीमांत किसानों पर कोरोना वायरस के खतरे के प्रभाव को कम करने और संकटग्रस्त फसली मौसम के दौरान किसान समुदाय को सहायता पहुंचाने के उद्देश्य से, टैफे

ने अपनी सामाजिक पहल (सी.एस.आर.) के तहत, अपने जेफार्म सर्विसेज प्लेटफॉर्म के माध्यम से मुफ़्त ट्रैक्टर रेंटल योजना की घोषणा की, जो 90 दिनों की अवधि के लिए चालू रहेगी। यह योजना राजस्थान के 20 जिलों में उपलब्ध होगी।

इस पहल के तहत, टैफे ने अपने मैसी फर्ग्यूसन और आयशर ट्रैक्टरों की एक बड़ी संख्या को उपलब्ध कराया है और फ्री ट्रैक्टर रेंटल यानी मुफ्त किराये के आधार पर बिना किसी क़ीमत या शुल्क के 11,000 ट्रैक्टर और 50,000 उपकरणों की पेशकश करेगा। मैसी फर्ग्यूसन, आयशर ट्रैक्टर्स और उपकरणों को किराए पर देने वालों को सीधे कंपनी द्वारा भुगतान किया जाएगा।

टैफे की चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर मल्लिका श्रीनिवासन ने बताया कि राजस्थान सरकार ने कोविड-19 संकट के दौरान किसानों की जरूरतों के प्रति काफी संवेदनशीलता दिखाई है, और हम राजस्थान के छोटे तथा सीमांत किसानों की सहायता के उद्देश्य से मैसी फर्ग्यूसन और आयशर ट्रैक्टर की फ्री रेंटल सेवाओं की पेशकश करने वाली टैफे की सामाजिक पहल (सी.एस.आर.) को स्वीकार करने के लिए सरकार के आभारी हैं। टैफे ने जेफार्म सर्विसेज प्लेटफॉर्म पर अपने मैसी फर्ग्यूसन और आयशर ट्रैक्टरों को पंजीकृत करने के लिए बड़ी संख्या में ग्राहकों को इकट्ठा किया है, ताकि रबी की फसल के दौरान राज्य के छोटे किसानों की कृषि मशीनीकरण की जरूरतों को पूरा किया जा सके।

किसान अपने ऑर्डर जेफार्म सर्विसेज मोबाइल ऐप या टोल-फ्री हेल्पलाइन 1800-4200-100 पर बुक कर सकते हैं। इसके अलावा, किसान राज्य भर में मौजूद क्षेत्र अधिकारियों, डीलर नेटवर्क आदि जैसे विभिन्न ऑन-ग्राउंड माध्यमों से भी अपने ऑर्डर बुक कर सकते हैं, जो पहले से ही राजस्थान के किसान समुदाय के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

प्रमुख सचिव, कृषि विभाग, राजस्थान सरकार नरेश पी. गंगवार ने कहा कि ट्रैक्टर्स एंड फार्म इक्विपमेंट (टैफे) जैसे सामाजिक रूप से जिम्मेदार कंपनियों को देखकर खुशी होती है,जो रबी के मौसम में, खासकर जब किसान कोविड-19 महामारी के कारण संकट का सामना कर रहे हैं, मैसी फर्ग्यूसन और आयशर ट्रैक्टरों को मुफ्त किराये पर देकर समय पर सहायता प्रदान कर रहे हैं। राजस्थान सरकार इस महत्वपूर्ण मोड़ पर टैफे के प्रयासों का स्वागत करती है।

# कोटक म्यूचुअल फंड का नया अभियान मिस्टर एसआईपी

**उदयपुर ( विज्ञप्ति )।** म्यूचुअल फंड निवेश के बारे में जागरुकता बढ़ाने और बाजार के उतार चढ़ाव से संबंधित जोखिम घटाने के लिए कोटक महिन्द्रा असैट मैनेजमेंट कंपनी (कोटक म्यूचुअल फंड) ने बातचीत करने वाला वॉइस बॉट मिस्टर एसआईपी लांच किया है। ऐसा करने वाली यह देश की पहली म्यूचुअल फंड कंपनी है और कंपनी ने खासतौर पर नई सदी के युवाओं को ध्यान में रख कर इसे पेश किया है। मिस्टर एसआईपी सिस्टेमेटिक इन्वैस्टमेंट प्लान से जुड़े सवालों का समाधान करेगा।

नीलेश शाह, एमडी और सीईओ, कोटक महिन्द्रा असैट मैनेजमेंट कंपनी ने कहा कि इस वॉइस बॉट में यह खासियत है कि यह खुद सीखता है, कोई पक्षपात नहीं करता और जो अपने से पूछे जाने वाले प्रश्नों के आधार पर यह खुद को निरंतर अपग्रेड करता है। ये खूबियां मिस्टर एसआईपी को निवेशकों के प्रश्नों का जवाब देने के लिए सक्षम बनाती हैं। मिस्टर एसआईपी कोटकएमएफडॉटकॉम पर उपलब्ध है। गूगल असिस्ट पर 'टॉक टू कोटक म्यूचुअल फंड' बोल कर और वॉट्सऐप (9321-88-44-88) पर 'हाय' भेज कर भी इस वॉइस बॉट तक पहुंच सकते हैं।

किंजल शाह, हैड-डिजिटल बिज़नेस एवं मार्केटिंग, कोटक महिन्द्रा असैट मैनेजमेंट कंपनी ने कहा कि टेलीविज़न कमर्शियल के साथ हम एक नई ऐप्रोच लेकर आए हैं जहां हमने एसआईपी को एक व्यक्ति का रूप दिया है, इस पात्र का नाम है मिस्टर एसआईपी, जो एसआईपी के बारे में गलतफहमियों को दूर करता है। इस प्रचार अभियान का दायित्व हाइपर कनेक्ट एशिया उठा रही है, कंपनी के सीसीओ और सह-संस्थापक किरण खड़के ने कहा कि हमें निवेशक शिक्षा सम्प्रेषण क्षेत्र की अव्यवस्था को तोड़ने का और एसआईपी का पर्याय बनने का कार्य सौंपा गया था। एसआईपी के बारे में हर वो जानकारी उपलब्ध कराता है जिसकी तलाश में वो हैं।

# एचडीएफसी बैंक को पीएम केयर्स फंड के लिए डोनेशन एकत्रित करने का मैंडेट मिला

**उदयपुर ( विज्ञप्ति )।** एचडीएफसी बैंक लिमिटेड को 'पीएम केयर्स फंड' एकत्रित करने का मैंडेट मिला है। इस फंड का उद्देश्य कोविड-19 महामारी के कारण उत्पन्न होने वाली किसी भी तरह की आपातकालीन स्थिति एवं आपदा से निपटना तथा इससे प्रभावित लोगों को राहत प्रदान करना है। लोग अपने घर बैठकर डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, एवं डिजिटल बैंकिंग चैनलों के माध्यम से अपना डोनेशन दे सकते हैं। इसके लिए उन्हें निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करना होगा।

दिया गए फंड के योगदान को सेक्शन 80 (जी) 15-20 दिनों के बाद पीएमकेयर्स पोर्टल से डाउनलोड की जा सकती है। डोनर्स अग्रणी नेशनल एनजीओ, जैसे गूंज, रैपिड रिस्पॉन्स फोर्स एवं हैल्पेज़ इंडिया को भी अपना योगदान दे सकते हैं। एचडीएफसी बैंक के मैनेजिंग डायरेक्टर आदित्य पुरी ने कहा कि हमें यह अवसर मिलना सम्मान की बात है। मैं सभी लोगों ने आग्रह करता हूँ कि वो हमारे जीवन को सुरक्षित करने के इस विशाल कार्य में भारत सरकार का सहयोग करें। हम वैश्विक संकट के दौर से गुजर रहे हैं। मेरा मानना है कि भारत ने समय रहते कदम उठाया है और हम इस चुनौती पर विजय पा लेंगे। एचडीएफसी ग्रुप ने पीएम केयर्स फंड में 150 करोड़ रु. का योगदान दिया है, ताकि भारत सरकार को इस महामारी के खिलाफ राहत व पुनर्वास के कार्यक्रमों में सहयोग दिया जा सके।

# कोविड-19 से राहत के प्रयासों में जेके टायर्स अपनी प्रतिबद्धता पर कायम

**उदयपुर ( विज्ञप्ति )।** नोवेल कोरोना वायरस (कोविड-19) के खिलाफ देश की लड़ाई का समर्थन करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को जारी रखते हुए, भारत की प्रमुख टायर निर्माता कम्पनी जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड ने नागरिकों की सुरक्षा और स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए अपने कांकरोली, मैसूर, बानमोर, चेन्नई और हरिद्वार में संयन्त्र के शहरों के विभिन्न स्थानों पर सार्वजनिक राहत उपायों की एक श्रृंखला शुरू की है। अपनी इस प्रतिबद्धता के तहत तत्काल ऑन-ग्राउंड प्रतिक्रिया के लिए समर्थन बढ़ाने की कम्पनी अपने इस दायित्व के तहत हर क्षेत्र में खाद्य आपूर्ति के साथ 10,000 से अधिक दैनिक वेतन भोगी और प्रवासियों तक पहुंच रही है।

इस अवसर पर जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज के चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि हम सभी एक अभूतपूर्व चुनौती का सामना कर रहे हैं और दुनिया कोविड-19 के प्रसार को रोकने की दिशा में अपने प्रयासों के साथ एक समुदाय बन गई है। जब हम अपने परिवार और कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित कर रहे हैं, तो समाज का एक बड़ा वर्ग बुनियादी सुविधाओं से वंचित है। हम हाशिए के समुदायों की ओर लक्षित राहत प्रयासों में हम विनम्रता के साथ अपनी भूमिका निभाने प्रतिबद्ध हैं। इसके अतिरिक्त, हमारे एक समूह, जेके आर्गेनाइजेशन ने प्रधानमंत्री कोष में योगदान दिया है और यह देश भर के कई स्थानों पर समुदायों और प्रवासी श्रमिकों की तात्कालिक जरूरतों को पूरा करने के लिए समर्पित रूप से काम कर रहा है। जेके टायर्स ने 25 गांवों में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया तथा पूरे भारत में अपनी निर्माण इकाइयों के आसपास बसे शहरों के आबादी क्षेत्रों में सर्वे कार्य भी किए हैं। टायर पर आरएण्डडी टीम एक किफायती वेंटीलेटर प्रोटोटाइप पर भी काम कर रही है। एक बार आवश्यक अनुमोदन प्राप्त हो जाने के बाद, जिला प्रशासन/स्वास्थ्य विभाग के निर्देशों के आधार पर, इन वेंटिलेटरों का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जा सकता है।

# कांटेक्ट ट्रेसिंग से करें प्रशासन की मदद

**उदयपुर ( विज्ञप्ति )।** जिलेवासियों को कोरोना महामारी के संक्रमण से बचाव के लिए उदयपुर जिला प्रशासन द्वारा हर व्यक्ति को अपने संपर्कों की सूची बनाते हुए कांटेक्ट ट्रेसिंग में प्रशासन की मदद का आह्वान किया है। जिला कलक्टर श्रीमती आनंदी ने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति एक छोटी नोटबुक या डायरी हमेशा अपने साथ रखे और हर दिन जिन-जिन व्यक्तियों के संपर्क में आए, दिनांकवार एक पन्ने पर उसका नाम लिखते जाए। इस प्रकार यदि हम कोरोना से संक्रमित होते हैं तो प्रशासन को हमारे संपर्क में आए सभी लोगों का पता लगाने में मदद मिलेगी। इसे कांटेक्ट ट्रेसिंग कहते हैं। उन्होंने कहा है कि इसके साथ ही अपने घर एवं संस्थान के सीसीटीवी हमेशा ऑन रखें। इस संदेश को अपने आस-पास अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचावें। उन्होंने स्पष्ट किया कि आमजन की हर छोटी से छोटी मदद प्रशासन के काम आएगी। इससे कई जिंदगियां बचाई जा सकती हैं और कोरोना जंग में उनका यह योगदान अहम् साबित होगा।

**चित्तौड़ के किले पर.....**

**( पृष्ठ दो का शेष )**

ऐसे मेले और भी लगते हैं। कहीं एकादशी को, कहीं पूर्णिमा को। चित्तौड़ के इस मेले की बड़ी भव्य तैयारी करनी पड़ती है। मुख्य दीपावली पर जो भूतों का मेला लगता है उसकी तैयारी तो दो ही दिन में कर ली जाती है पर इस मेले की तैयारी में पूरे नौ दिन लगते हैं।

इसी दौरान हम बाहर सड़क पर भी निकले। हमने देखा कि भामाशाह की हवेली से कुंभा महल तक के उस पूरे फैले आकाश में निरंतर कोई न कोई बिम्ब आता दिखाई दे रहा है। इनमें कभी कोई हलकी रोशनी होती, कभी तेज, बहुत तेज। कभी पीली, कभी नीली, कभी लाल, कभी एकदम तेज वाली तो कभी लपलपाती।

एक अजीब सुहावना नजारा हम देखते रहे। इतनी सारी दिखती, अलोप होती, लम्बे समय तक निरंतर आती दिखाई देती रोशनियों से हमने अनुमान लगा लिया कि कल के मेले में कितनी दिव्यात्माएं जुड़ेंगी। कल्लाजी ने बताया कि सबके सब महल और हवेलियां दिव्यात्माओं के ठहरने के लिए व्यवस्थित कर सजा दी गई हैं। सबकी ठहरने की जगह तय है। सब जगह उनकी सेवा के लिए नौकर-चाकर सैनिक तैनात हैं।

सायंकालीन भोजनादि से निवृत्त हो हम कल्लाजी के आदेश की प्रतीक्षा ही कर रहे थे कि मानसिंहजी का पधारना हुआ। बोले- 'सभी पीर, पैगम्बर, ओलिया, देव अपनी-अपनी जगह हैं। अब आप यहां से प्रस्थान करिये। दक्षिण दिशा में जाइये जहां राठौड़जी (कल्लाजी) बिराजे हुए हैं। वहां से आप उत्तर की ओर आयेंगे जहां हम आपका इन्तजार करेंगे। देवी (कालिका) के दर्शन कर पीर, पैगम्बर, फकीरों, ओलियों को सलाम करना।

उत्तर की ओर कुछ महान राजपूत ठहरे हुए हैं। कुछ ओलिया, फकीर, पीर दक्षिण में हैं। आप किसी को ऊंगली बताने की गलती मत करना। नैत्र फिराते रहें और चलते रहें। ऊंगली बतायंगे तो दीपक बुझ जायेगा और आप कुछ भी देख नहीं पायेंगे। जयपुर की ओर से भी हमारे कुछ पुरखे आये हैं। हम उन्हीं से गुप्तगू करते रह गये सो यहां आने में देरी हो गई। राठौड़जी हमें माफ करें। वक्त पर चलिये। वक्त से आइये और जाइये। हमारी जैसी सेवा है उसे कबूल करना। हैं तो हम भी आपके। विश्वंभर आपका भला करे। जय विश्वंभर।'

उनके जाते ही हमने फटाफट निकलने की तैयारी कर ली। हमने फलों में संतरा, नारंगी, सेव तथा केला अपने साथ लिया। तीन-चार तरह की मिठाई ले ली। कुछ नारियल ले लिये। दूध की बोतल ले ली। कल्लाजी ने संकेत दे दिया कि रास्ते में कोई बोलेगा नहीं। मैं एक अंगुली का इशारा करूं तो नमन करना। दो अंगुली बताऊं तो फल डाल देना, मिठाई डाल देना और हाथ पीछे करूं तो अमल-दूध की धार दे देना। इस समय रात की आठ बज चुकी थी। हम धर्मशाला से निकलकर सीधे कालिका मन्दिर पहुंचे जहां कालिका को श्रीफल चढ़ाकर विजय स्तम्भ के रास्ते लौटे।

इधर आते वक्त हमें कई प्रकाश बिम्ब दिखाई दिये। दूर पहाड़ी पर एक लम्बी कतार दीपकों की दिखाई दी। बताया कि ये सब कल्लाजी के सैनिक हैं और उनके बीच एक सफेद रोशनी वाले मानसिंहजी हैं। रास्ते में छोटी-बड़ी तेज, कम तेज वाली रोशनियां दिखाई दीं। कई जगह हमने खड़े रहकर इन रोशनियों को काफी देर तक निहारा।

जब-जब जहां-जहां कल्लाजी ने इशारा दिया हमने नमन किया और अपने साथ की सामग्री उन्हें भेंट की। पत्ता महल से गुजरते हुए हमें मालपुओं की बड़ी तीव्र खुशबू आई और दो परछाइयां दिखाई दीं जिनसे कल्लाजी ने बात करते हुए कहा- 'राजी रीजो।' हमारे पूछने पर उन्होंने बताया कि यहां मरदाना भोज चल रहा है। यदि मैं आपके साथ नहीं होता तो इस भोज में शामिल होता।

कुम्भा महल में हमें बहुत समय तक बहुत सारी भीड़ लिये परछाइयां देखने को मिलीं। कल्लाजी ने बताया कि यहां जनाना सरदार का जीमण रखा गया है। भोजन की तैयारी चल रही है। कुछ देर तक हम भी वहीं घूमते रहे और लगातार परछाइयों का आना-जाना देखते रहे। ऐसा ही लग रहा था कि महिलाओं की पूरी की पूरी भीड़ उमड़-घुमड़ कर घटाटोप हो रही है। कुछ समय बाद जौहर कुण्ड से आने वाली सतियों की पंक्तिबद्ध कतार दिखाई दी जो भोजन के लिए आ रही थी। यहां इस सारी व्यवस्था का जिम्मा पुरानी दासी कासीबाई को सौंप रखा था। मुसलमान आत्माओं के खाने की व्यवस्था नौ गजा पीर के वहां रखी गई थी।

दिव्यात्माओं का यह मेला मुझे भूतों के मेले की तरह कतई डरावना नहीं लगा। चांदनी रात का यह मेला हम लोगों के लिए बड़ा सुखद और शांतिमय रहा। इसके आनंद की अनुभूति का क्या शब्द दूं! शब्दों में बांधने का यह मेला है भी नहीं। यही कहना फिलहाल तो बहुत पर्याप्त है कि जो दिव्य अनुभूति हुई वह इस लोक की अनुभूति तो नहीं ही कही जा सकती और वैसे भी अभी तो इस यात्रा का प्रारम्भ मात्र है। कौन जाने कहां-कहां की यात्रा अभी शेष है।

# एम.बी. हॉस्पिटल में चौबीसों घंटे मुस्तैद रेडियोग्राफर्स

**उदयपुर ( कार्यालय सवाददाता )।** कोरोना वायरस के चलते एम. बी. हॉस्पिटल में चौबीसों घण्टे जांच के लिए रेडियोग्राफर्स बड़ी मुस्तैदी से अपनी सेवाएं दे रहे हैं। मुख्य रेडियोग्राफर महावीर भाणावत, अरूण

सक्सेना तथा गेहरीलाल पाटीदार की टीम 26 मार्च से अपनी सेवाएं देने हेतु घर-परिवार से दूर हैं।

महावीर भाणावत ने बताया कि हमारी टीम में अरूण सक्सेना 59 वर्ष के हैं। वे स्वयं उच्च रक्तचाप से ग्रसित हैं जबकि पाटीदार हृदय रोग के शिकार हैं किन्तु तीनों ही अपना दुखड़ा भूल रोगियों की सेवा के लिए सदैव तत्पर, चौकन्ने और सजग बने हुए हैं।

महावीर ने बताया कि वे सुपर स्पेश्येलिटी ब्लॉक में हैं। उनके पास दो डिजीटल मशीनें हैं जो नई हैं। डॉक्टर के परामर्शानुसार वे चल मशीन लेकर वार्ड में प्रत्येक रोगी के पास जाकर जांच करते हैं और आवश्यकतानुसार आवश्यक रोगी को अपने ब्लॉक में लाते हैं। कोरोना की जांच में उन्हें अधिकतम 20 मिनिट लगते हैं। साधारण जांच वे फटाफट कर रोगी को तत्काल सुविधा उपलब्ध कराकर निश्चिंत करते हैं। उनका अस्थाई निवास कजरी होटल में है।

# सांसद मीणा ने ढेलाणा में 80 परिवारों को बाटी राशन सामग्री

**उदयपुर ( विज्ञप्ति )।** उदयपुर सांसद अर्जुन लाल मीणा ने सोमवार को सांसद आदर्श ग्राम ढेलाणा में 80 जरूरतमंद परिवारों को राशन सामग्री वितरित की। इस अवसर पर उपस्थित ग्रामीणों को मीणा ने आश्वस्त किया

कि कोरोनावायरस के दौरान किसी भी गरीब परिवार को जो भी सहायता चाहिए वह उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने ग्रामीणों से लॉक डाउन का पालन करने का आग्रह किया।

इस दौरान पूर्व प्रधान सालिगराम खराड़ी, वरिष्ठ भाजपा नेता पारस जैन ,भाजपा ओबीसी मोर्चा जिला उपाध्यक्ष अमित कलाल, मंडल अध्यक्ष हेमंत मेहता,उपाध्यक्ष बदामीलाल सुथार,महामंत्री भूपेंद्र कलाल,खेरवाड़ा सरपंच लक्ष्मी अहारी,भाजपा नेता बजरंग अग्रवाल,समाजसेवी रविन्द्र जोदावत, प्रेमचंद कलाल,परेश जैन,पूर्व उपसरपंच संजय शर्मा भी उपस्थित थे। सांसद निधि से 5 लाख रुपये की अनुशंषा सांसद अर्जुनलाल मीणा ने आपात की इस स्थिति में उदयपुर शहर के निर्धन व गरीब परिवारों व मजदूर लोगों को आवश्यक राशन सामग्री उपलब्ध कराने हेतु की है। इस राशि से क्रय की गई सामग्री को उदयपुर नगर निगम के सहयोग से आवंटिन कराने को कहा है।

# हिंदुस्तान यूनिलीवर व यूनिसेफ में साझेदारी

**उदयपुर ( विज्ञप्ति )।** हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड (एचयूएल) ने संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) के साथ मिलकर व्यापक जन संचार अभियान शुरू करने और कोविड-19 के खिलाफ आम जनता को जागरूक और सशक्त बनाने की घोषणा की।

इस अभियान में एचयूएल की मार्केटिंग विशेषज्ञता एवं उसका व्यापक स्तर तथा यूनिसेफ का तकनीकी ज्ञान मिलकर काम करेगा, ताकि लोगों के व्यवहार बदलने और वैश्विक महामारी के दौर में सुरक्षित रहने में मददगार संचार उपकरण तैयार किए जा सकें। एचयूएल ने हाल ही में भारत को कोविड-19 महामारी से लड़ने में मदद के लिए 100 करोड़ रुपये के योगदान की जानकारी दी थी। इस अभियान के अलावा एचयूएल देश भर के नागरिकों की साबुन, सैनिटाइजर और टॉयलेट क्लीनर जैसे आवश्यक उत्पादों तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए कई पहल शुरू कर रहा है।

## डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से कुछ तो अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

| पुस्तक का नाम | मूल्य |
|---|---|
| भारतीय लोकनाट्य | 1500/ |
| परंपरा का लोक | 475/ |
| आदिवासी लोक | 350/ |
| जनजाति जीवन और संस्कृति | 295/ |
| महाराष्ट्र के लोकनृत्य | 200/ |
| आदिवासी जीवनधारा | 395/ |
| जनजातियों के धार्मिक सरोकार | 150/ |
| राजस्थान के लोकनृत्य | 200/ |
| गुजरात के लोकनृत्य | 200/ |
| राजस्थान के लोक देवी देवता | 150/ |
| भारतीय लोकमाध्यम | 75/ |
| अजूबा भारत | 200/ |
| पाबूजी की पड़ | 50/ |
| लोककलाओं का आजादीकरण | 250/ |
| उदयपुर के आदिवासी | 250/ |
| निर्भय मीरां | 250/ |
| रंग रूड़ो राजस्थान | 100/ |
| कुंवारे देश के आदिवासी | 100/ |
| जन्हें मैं जानता हूं | 100/ |
| जैन लोक का पारदर्शी मन | 150/ |
| गवरी | 60/ |
| राजस्थान के थापे | 150/ |
| कठपुतली | 60/ |
| जनजातियों में गाथा गायकी | 350/ |

**हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें**

| | |
|---|---|
| संरक्षक | 11000/ |
| विशिष्ट सदस्य | 5000/ |
| आजीवन सदस्य | 3000/ |
| शब्दरंजन के सहयात्री | 1000/ |
| साहित्यिक चौपाल | 500/ |
| वार्षिक संस्थागत | 300/ |
| वार्षिक व्यक्तिगत | 250/ |

**शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।**

( **Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

**कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।**

**shabdranjanudr@gmail.com**

# जार द्वारा कोरोना हेल्पिंग ग्रुप को 21,121 रूपये की राशि भेंट

**उदयपुर (कार्यालय संवाददाता)।** कोरोना वायरस (कोविड-19) के खिलाफ चल रही देशव्यापी जंग में जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार), उदयपुर एक बार फिर आगे आया है। जार की उदयपुर इकाई ने एक और पहल करते हुए कोरोना हेल्पिंग ग्रुप के हनुवंतसिंह राजपुरोहित को 21,121 रूपये की राशि प्रदान की।

जार के जिलाध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि इस राशि का उपयोग जरूरतमंदों को आवश्यक सामग्री सुलभ कराने में किया जाएगा। डॉ. भानावत ने कहा कि सामाजिक सरोकारों में जार हमेशा अग्रणी रहा है। कोरोना वायरस के लगातार बढ़ते संक्रमण के दौर में फील्ड पत्रकारिता के दौरान ही कई ऐसे उदाहरण सामने आ रहे हैं जिनमें लोगों को तत्काल मदद की जरूरत है। ऐसे में जार से जुड़े सभी पदाधिकारी व सदस्य अपने स्तर पर भरपूर मदद कर रहे हैं। सहायता के इस क्रम में जार ने भामाशाह मुकेश जैन, डॉ. रविकुमार शर्मा एवं अजय सरूपरिया के प्रति आभार व्यक्त किया है और उम्मीद जताई है कि सहायता का यह क्रम इसी प्रकार जारी रहेगा। इस अवसर पर उपाध्यक्ष भूपेन्द्र चौबिसा एवं कोषाध्यक्ष अल्पेश लोढ़ा उपस्थित थे।

महासचिव अजय आचार्य ने बताया कि इसी क्रम में जार द्वारा 21000 (इक्कीस हज़ार) रूपये का चेक जार की प्रदेश कार्यकारिणी के अध्यक्ष हरिबल्लभ मेघवाल को भिजवाया गया है। श्री मेघवाल के अनुसार पूरे राजस्थान में कार्यरत जिला इकाइयों से जो राशि प्राप्त होगी वह मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री सहायता कोष हेतु प्रदान की जायेगी।

# युवा क्रान्ति संगठन के युवा भी सेवा कार्य में आगे आए

**उदयपुर (विज्ञप्ति)।** कोरोना वायरस से निपटने के लिए सरकार द्वारा किये गये लॉकडाउन से उत्पन्न संकट में युवा क्रान्ति संगठन द्वारा

ज़रूरतमन्द एवं असहाय लोगों के लिए प्रतिदिन 2000 से अधिक भोजन पेकेट का वितरण किया जा रहा है।

युवा क्रान्ति के संस्थापक आकाश वागरेचा ने बताया कि भोजन पेकेट पहुंचाने का कार्य वार्ड 66, 67, अलीपुरा कच्ची बस्ती, कृष्णपुरा बस्ती, न्यूभूपालपुरा, सोभागपुरा 100 फीट रोड़, भीलूराणा कोलोनी, मठ मादड़ी, बेदला, शास्त्री सर्कल, मल्लातलाई, अशोकनगर, कालकामाता रोड़, आदर्श नगर, महाराणा भोपाल चिकित्सालय सहित अन्य स्थानों पर यह कार्य 24 मार्च से तीनों टीमों के माध्यम से प्रतिदिन किया जा रहा है। लगभग 25 से अधिक कार्यकर्ता खाना बनाने से लेकर वितरण में लगे हुए हैं।

वल्लभनगर ओसवाल जैन सोसायटी के अध्यक्ष गुणवन्त वागरेचा ने बताया कि संस्थान का मुख्य उद्देश्य खाने की गुणवत्ता तथा स्वच्छता को लेकर है। इस कार्य को लेकर कई लोगों, समाजसेवियों एवं क्षेत्रवासियों ने स्वेच्छा से मदद की है। साथ ही राज्य महिला आयोग की सदस्या सुषमा कुमावत द्वारा ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों को चाय, बिस्किट, फ्रूट, पानी का वितरण किया जा रहा है।

इस कार्य में वार्ड 66 की पार्षद रेखा ऊंटवाल, वार्ड 67 की पार्षद कुसुम पंवार, अमित लोदा, अभिषेक लोदा, नवनीत गुप्ता, युवा मोर्चा राणाप्रताप मंडल के अध्यक्ष नितिन जैन, लोकेश वसीटा, भरत वैष्णव, संजय खंडेलवाल, महेश शर्मा, पंकज यादव, अल्पेश लोढ़ा, गिरिराज माली, अंकुर ओसवाल, रमेश पालीवाल, आर के चाऊमीन सहित कई समाजसेवी अपनी उल्लेखनीय सेवाएं दे रहे हैं।

# पारस जे. के. हॉस्पिटल की अनोखी पहल

**उदयपुर (विज्ञप्ति)।** पारस जे. के. हॉस्पिटल लॉकडाउन के दौरान डॉक्टर के द्वारा लिखी गई दवाएं उदयपुरवासियों के घरों तक निशुल्क डिलीवरी कर रहा है। इसके लिए उनसे दवाओं की डिलवरी का कोई भी अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जा रहा है।

पारस जे. के. हॉस्पिटल उदयपुर के डायरेक्टर विश्वजीत ने बताया कि लॉकडाउन की स्थिति में मरीजों को दवा लेने के लिए घर से बाहर निकलना पड़ता है। इस कारण उनको संक्रमण की संभावना ज्यादा हो जाती है। इसको ध्यान में रखते हुए आमजन की सुविधा के लिए पारस जे. के. हॉस्पिटल ने यह कदम उठाया है। इसके लिए मरीज की दवा का मूल्य कम से कम 500 रुपये होना चाहिये व दवायें केवल डॉक्टर के द्वारा लिखे गये प्रिस्क्रिप्शन के द्वारा ही दी जाती हैं।

विश्वजीत ने बताया कि इसके तहत हम डॉक्टर के द्वारा लिखा प्रिस्क्रिप्शन अस्पताल के मोबाइल नम्बर पर वाट्सएप्प करवाते हैं। इसके बाद रोगियों की दवाइयां बिना किसी डिलीवरी चार्ज के पहुंचाते हैं। इसके लिए अस्पताल में उपलब्ध बाईक एम्बुलेंस के द्वारा सभी तरह की सावधानियों को ध्यान में रखकर दवाओं को पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। इस सेवा से अब तक कई मरीज लाभान्वित हो चुके हैं।

# सुरक्षा का रखें पूरा ध्यान : राज्यपाल

**जयपुर (सुजस)।** राज्यपाल कलराज मिश्र ने लोगों से कहा है कि कोरोना वैश्विक महामारी को मात देने के लिए सुरक्षा का पूरा ध्यान रखना है। लोग मास्क, गमछा, दुपट्टा या रूमाल से अपने नाक और मुंह को ढक कर रखें। सामाजिक दूरी बनाये रखना आवश्यक है। लॉकडाउन लोगों की भलाई और उनके जीवन की सुरक्षा के लिए ही रखा गया है। प्रदेश से कोरोना के अंधियारे को मात देने के लिए भी लोगों को मिलकर प्रयास करने होंगे।

राज्यपाल ने कहा कि इस लॉकडाउन के दौरान त्यौहार भी आ रहे हैं। राज्यपाल ने त्यौहारों पर लोगों को शुभकामनाएं देने के साथ ही घर से बाहर न निकलने और घर में रहकर ही पर्वों को मनाने की हिदायत दी और कहा कि देशहित के इस कार्य में लागों को धीरज का परिचय देना होगा।

राज्यपाल युवाओं और बच्चों की शिक्षा के प्रति बेहद चिन्तित हैं। प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को आनलाइन अध्ययन कराने की व्यवस्था करने के उन्होंने आवश्यक निर्देश दिये हैं। राज्यपाल ने छात्र-छात्राओं को कहा है कि ऑनलाइन अध्ययन कर अपने समय के एक-एक पल का सदुपयोग करें।

उल्लेखनीय है कि राज्यपाल स्वंय भी कोरोना से बचाव के मापदण्डों का पूरा ध्यान रख रहे हैं। वे प्रदेश में कोरोना से बचाव के लिए किए जा रहे प्रयासों और उपायों पर सतत निगरानी बनाये हुए हैं। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से लगातार वार्ता कर जानकारी ले रहे हैं। स्वंयसेवी संस्थाओं, पंडितों, मौलवियों, बिशप सहित विभिन्न सम्प्रदायों के लोगों से दूरभाष और वीडियो कान्फ्रेंस के माध्यम से लोगों को कोरोना से बचाव के उपायों को अमल में लाने का बार-बार अनुरोध कर रहे हैं।

राज्यपाल समाचारपत्रों और इलेक्ट्रानिक मीडिया में आ रही वैश्विक महामारी कोरोना से जुड़ी प्रत्येक खबर पर संज्ञान ले रहे हैं। विभिन्न विभागों के मंत्री, सचिव और जिलों के अधिकारियों से जानकारी ले रहे हैं और उन्हें सलाह मशविरा भी दे रहे हैं।

# कानोड़ मित्र मंडल द्वारा एक लाख इक्यावन हजार रूपये की राशि भेंट

**उदयपुर (कार्यालय संवाददाता)।** कानोड़ मित्र मंडल उदयपुर द्वारा लॉकडाउन से प्रभावित परिवारों की मदद के लिए अतिरिक्त जिला कलेक्टर (प्रशासन) ओमप्रकाश बुनकर को एक लाख इक्यावन हजार का चेक प्रदान किया गया।

मित्र मंडल के अध्यक्ष हिमांशु राय नागोरी ने बताया कि उदयपुर में रह रहे कानोड़वासियों ने सदैव ही आपदाजनित परिस्थितियों में अग्रणी भूमिका निभाई है। इसी के चलते लॉकडाउन के दौरान जो परिवार मजदूरी पर नहीं जा पा रहे हैं उन तक राशन सामग्री पहुंचाने लिए मित्र मण्डल ने यह बीड़ा उठाया है।

इस अवसर पर उपाध्यक्ष जीवनसिंह पोखरना, कोमल वया, महामंत्री दिलीपकुमार भानावत, कोषाध्यक्ष तख्तसिंह भाणावत, सह सचिव संजय अलावत ने बताया कि कानोड मित्र मंडल ने यह चेक उदयपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भंडार लिमिटेड, उदयपुर के नाम पर दिया है।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व मित्र मंडल के पदाधिकारियों ने अपनी जन्मभूमि कानोड़ के लिए वहां की नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी प्रभुलाल सुथार को इक्यावन हजार का चेक भी सौंपा था। कानोड मित्र मंडल उदयपुर द्वारा किए गए इस सहयोग की सराहना प्रत्येक कानोड़ निवासियों की जबान पर सुनने को मिल रही है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।